श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल, राजस्थान का उद्‌बोधन

अन्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक का उद्‌घाटन एवं ''रामदास अग्रवाल मार्ग'' का लोकार्पण

दिनांक –20 अक्टूबर, 2019 **समय – 11 : 30 बजे**

स्थान – होटल मैरियट , जयपुर

अन्तर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक के उद्घाटन और रामदास अग्रवाल मार्ग के इस लोकार्पण समारोह में आकर मुझे प्रसन्नता हो रही है।

स्वर्गीय रामदास अग्रवाल को मेरी विनम्र श्रद्वाजंलि। रामदास जी अपने आप में एक युग थे। उनकी बेदाग छवि रही। सामाजिक कार्यों में उनकी सक्रिय भागीदारी रही। समाज के सभी क्षेत्रों में स्व. रामदास जी को आज भी याद किया जाता है।

राज्य सभा में तीन बार सदस्य रहे। वे निर्विवाद रहे। उनका राजनीतिक जीवन पांच दशकों का रहा। वे अनेक महत्वपूर्ण पदो पर रहे।

श्री रामदास जी अग्रवाल सम्पूर्ण वैश्य समाज के अधिनायक थे। उन्होंने अपने 50 वर्षों के राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन में विभिन्न घटकों में बिखरे वैश्य समुदाय को एक सूत्र में पिरोने का अभूतपूर्व कार्य किया। उन्होंने वैश्य समुदाय को विश्व स्तर पर सशक्त और एकजुट करने के लिये अपना अविस्मरणीय योगदान दिया।

श्री अग्रवाल प्रारम्भ से ही राष्ट्रीय स्यवं सेवक संघ, विद्यार्थी परिषद, विश्व हिन्दू परिषद, वनवासी कल्याण परिषद, चैम्बर ऑफ कॉमर्स जैसी अनेक संस्थाओं से जुड़े रहे तथा सक्रियता से काम करते हुए अनेक पदों की शोभा बढ़ाई। उन्होंने आदिवासी लोगों के उत्थान के लिये वनवासी कल्याण परिषद के अन्तर्गत FTS (फ्रैन्डस ट्राईबल सोसायटी) की स्थापना की तथा उसके संस्थापक अध्यक्ष बने।

श्री रामदास जी अग्रवाल ने अपने राज्य सभा के 18 वर्ष के संसदीय कार्यकाल में विभिन्न मुद्दों को बहुत ही तर्कपूर्ण ढंग से संसद में उठाया और व्यापार जगत को राहत पहुंचाने का कार्य किया। भाजपा राजस्थान के अध्यक्ष पद पर रहते हुये उन्होंने राजस्थान जाट समुदाय के आरक्षण का मामला हो या गुर्जर आन्दोलन ऐसे अनेको मुद्दों को सफलतापूर्वक अपनी सूझबूझ और कार्य कुशलता से शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाया।

चुनौतियों से जूझना उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग था, समस्याओं को हल करते हुए आगे बढ़ना, चलते जाना, बस चलते जाना, जो साथ आए, उसे अपना हमसफर बना लेना, यही थे रामदास अग्रवाल जी के व्यक्तित्व के वो रंग, जिसकी बदौलत उनका कुनबा इतना बड़ा हो गया है कि उसमें पूरी दुनिया समा गई।

विश्वबंधुत्व की सोच से रामदास जी ने वैश्य समाज को लेकर अंतर्राष्ट्रीय मंच तैयार किया। दुनियाभर में फैले समाज के लोगों को इस संदेश के साथ बुलावा भेजा कि आओं साथ मिलकर भारत और विश्व समाज के लिए कुछ और बेहतर करें। वर्ष 2013 में उन्होंने '' अन्तर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन की स्थापना की। सभी राजनैतिक दलों के वैश्यों को एकजुट कर अन्तर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेल का सदस्य

बनाया तथा आई.वी.एफ. को एक अराजनैतिक संस्था बनाकर अपनी दूरदर्शिता दिखाई। हम उनके 5 दशकों के सामाजिक जीवन में किये गये कठोर परिश्रम, निष्ठा एवं उत्साह को प्रणाम करते है।

आज वे हमारे बीच नही है परन्तु उनकी सोच, भावना एवं समाज हित में निःस्वार्थ किए गए कार्य हमें सदैव प्रेरित करते रहते हैं। श्री रामदास अग्रवाल जी के पदचिन्हों पर चलना ही उनके लिये सच्ची श्रद्वाजंलि है।

वैदिक युग के आगमन के बाद से एक समुदाय जिसने भारत में आज जो योगदान दिया है, वह है, वैश्य समुदाय। इस समुदाय ने अर्थव्यवस्था, राजनीति, समाज या संस्कृति में एक अमिट छाप छोड़ी है।

वैश्य समुदाय ने सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, औद्योगिक, साहित्य और पत्रकारिता सहित विविध क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभाई है। इसमें कोई संदेह नही है, इस समुदाय ने अद्भुत उपलब्धियों के नए मापदंडों को परिभाषित किया है, जो राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अन्य समुदायों के लिए अनुकरणीय है।

प्राचीन शास्त्रों के अनुसार वैश्य समाज का कर्तव्य कृषि, पशुपालन और व्यापार के माध्यम से समुदाय की समृद्धि सुनिश्चित करना था। बाद में वे व्यापारी बन गए। इससे वैश्य समुदाय के लोग आर्थिक रूप से मजबूत हो गए क्योकि उन्होंने वाणिज्य को नियंत्रित किया। उनमें से कई प्रभावशाली लोगों को गौरव उपाधियों से सम्मानित किया गया। बनिया शब्द जो आज अधिक प्रचलित है, वास्तव में संस्कृत शब्द वणिक अर्थ व्यापारी से लिया गया है। दुनिया भर में वैश्य समुदाय ने अस्पतालों के निर्माण, विश्वविद्यालयों और विकासशील उद्योगों द्वारा समाज के लिए योगदान दिया है।

यह समुदाय युगों से अपनी सामाजिक और वित्तीय स्थिरता को बनाए रखने में काफी हद तक सफल रहा है। देश में राजस्व और महत्वपूर्ण योगदान के साथ स्कूल, अस्पताल, कुएं और धर्मशालाएं बनाने जैसे सामाजिक दायित्वों को इस समुदाय ने पूरा किया।

इस समुदाय ने महाराजा अग्रसेन, संत सुंदरदास, भामाशाह, राजा अशोक, चंद्रगुप्त, चाणक्य, महात्मा गांधी, राममनोहर लोहिया, लाला लाजपत राय, जय शंकर प्रसाद, मैथली शरण गुप्त जैसे प्रभावशाली व्यक्ति दिये। हमारे देश की स्वतंत्रता के लिए लाखों वैश्य लोगों ने योगदान दिया है। महात्मा गांधी और उनके अनुयायी वैश्य समाज से थे। इस समुदाय ने देश को हजारों बड़े व्यापारी भी दिये है– जैसे श्री घनश्याम दास जी बिड़ला, जमनालाल जी, दुर्गा प्रसाद मंडेलिया कमला पंत सिंघानिया आदि।

इन लोगों के प्रयासों और दृष्टिकोण ने राष्ट्र को आर्थिक रूप से प्रगति करने की नई दिशा दी। समाज के लोगों का देश व प्रदेश के विकास में योगदान महत्वपूर्ण रहा है। मुझे इस मौके पर बुलाया, इसके लिए आप सभी का आभार।

धन्यवाद। जय हिन्द।